

नवधृति

मानवाधिकार

PRGI No. RJBIL/26/A0880



सच साहस न्याय की खबर समाचा

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 04

सम्पादक: श्रवण पंवार, जयपुर मो.: 9251120059

जयपुर, जुलाई, 2026

भारत की विरासत, विज्ञान और विकास का विशेष अंक



— सच • अधिकार • समाज —

आवश्यकता

NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
— DIGITAL & PRINT MEDIA —

देश-प्रदेश में समाचार पत्रिका के विस्तार हेतु
पत्रकार/संवाददाता एवं विज्ञापन एजेंट्स
की आवश्यकता है।

अगर आपको अपने क्षेत्र व देश की समस्याओं को



सामने लाने का जुनून है



पत्रकार के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं



समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहयोग करना चाहते हैं



तो यह आपके लिये एक सुनहरा अवसर है।

हमसे जुड़ें, बदलाव का हिस्सा बनें !



आपको मिलेगा



समाज में सकारात्मक
बदलाव लाने का
अवसर



अपनी आवाज
को मंच देने का
अवसर



पहचान बनाएं,
सम्मान पाएं,



करियर में नई
ऊँचाइयों को छुएं

संपर्क करें

जिला संवाददाता – तहसील/ब्लॉक रिपोर्टर,
ब्यूरो चीफ

मुख्य कार्यालय :
जयपुर, राजस्थान

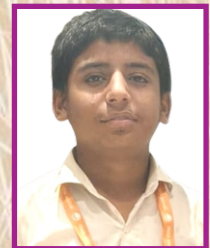
9251120059



www.nms.news

“ मानवाधिकार की रक्षा – हमारा संकल्प, आपकी आवाज – हमारी ताकत ”

महादेव पंवार
सॉफ्टवेयर इंजीनियर व डवलपर्स



नवधृति

मानवाधिकार

PRGI No. RJBIL/26/A0880



सच साहस न्याय की खबर समाचा

प्रकाशक — श्रवण पंवार, जयपुर

वर्ष : 01

अंक : 04

दिनांक : जुलाई, 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
के सदस्य शुल्क का विवरण



सदस्यता शुल्क (वार्षिक)
400/- रुपये पोस्टेज सहित

प्रकाशक एवं सम्पादक
श्रवण पंवार
जयपुर (राजस्थान)

जयपुर कार्यालय
पथ नं. 6, प्लॉट नं-39, नियर खेतान
हॉस्पिटल, विजयवाड़ी, सीकर रोड़,
जयपुर (राज.) 302039
मो.: 9251120059
www.nms.news
E-mail: info@nms.news

कम्प्यूटर डिजाईनिंग
जयते प्रिंटर्स मो.: 7790990770

नोट- समस्त विवाद जयपुर
न्यायालय के अंतर्गत रहेगा

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01	सम्पादकीय	01
02	हनुमानगढ़ जिला- 12 जुलाई 1994	02
03	अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस	03
04	कहानी भारत की पहली महिला डॉक्टर की	04
05	चन्द्रमा पर पहली बार मनुष्य के कदम	05
06	गुप्त नवरात्रि	07
07	गुरु पूर्णिमा	08
08	सफलता का सूत्र	09
09	31 जुलाई : मुंशी प्रेमचंद की जयंती	10
10	स्वतंत्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता	12
11	भारत का सबसे विशाल दुर्ग: चित्तौड़गढ़ दुर्ग	13
12	कैसे लाइफ स्टाइल में बदलाव करके...	19
13	यूपीएससी में विभिन्न पदों पर निकली भर्ती	20
14	जगन्नाथ रथ यात्रा- इतिहास, उत्पत्ति और संपूर्ण...	21
15	राजस्थान संक्षिप्त परिचय	22

स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक व सम्पादक श्रवण कुमार पंवार के लिए प्रिन्टर्स (मुद्रक)
विजेन्द्र प्रकाश हलचल, विजय पथ, धानी नगर, श्याम नगर, फुलेरा, जयपुर (राजस्थान)
से मुद्रित एवं लखेरा शक्ति क्रियेशन प्रा.लि., सी-1 सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया,
22 गोदाम, जयपुर (राज.) 302039 से प्रकाशित

जुलाई: सेवाएं संस्कार, प्रकृति और मानवाधिकार सन्देश

प्रिय पाठकों,

आप सभी का 'नवधृति मानवाधिकार समाचार' के जुलाई 2026 अंक में हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन।

वर्षा ऋतु का प्रारम्भ केवल मौसम परिवर्तन का संकेत नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के नवजीवन, आशा और पुनर्निर्माण का भी संदेश देता है। सूखी धरती पर पहली वर्षा की बूँदें जिस प्रकार नई ऊर्जा का संचार करती हैं, उसी प्रकार समाज में मानवता, संवेदनशीलता और न्याय की भावना भी नए उत्साह के साथ विकसित होनी चाहिए। यही इस अंक का मूल संदेश है।

भारतीय संस्कृति में जुलाई का महीना आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस माह जगन्नाथ रथ यात्रा, देवशयनी एकादशी, गुप्त नवरात्रि और गुरु पूर्णिमा जैसे महान पर्व मनाए जाते हैं। ये पर्व केवल धार्मिक आयोजन नहीं हैं, बल्कि सेवा, समर्पण, अनुशासन, समानता और सद्भाव जैसे जीवन मूल्यों की प्रेरणा भी देते हैं। गुरु पूर्णिमा हमें ज्ञान के महत्व का स्मरण कराती है। गुरु केवल शिक्षा देने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन का मार्ग प्रशस्त करने वाले प्रकाश स्तंभ होते हैं। आज जब समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब सही मार्गदर्शन, नैतिक शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। जगन्नाथ रथ यात्रा हमें यह संदेश देती है कि ईश्वर सभी के हैं और समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। लाखों श्रद्धालुओं का एक साथ रथ खींचना सामाजिक एकताएँ सहयोग और समरसता का अद्भुत उदाहरण है।

देवशयनी एकादशी और चातुर्मास आत्मचिंतन, संयम, सेवा और आध्यात्मिक उन्नति का संदेश देते हैं। यह समय केवल धार्मिक साधना का नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का भी अवसर है। मानवाधिकार केवल कानूनी विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान, सुरक्षा और गरिमा से जुड़ा हुआ विषय है। भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ वातावरण, सुरक्षित जीवन और समान अवसर प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। इन अधिकारों की रक्षा तभी संभव है जब समाज जागरूक, जिम्मेदार और संवेदनशील बने।

इस अंक में हमने राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय समाचारों के साथ-साथ मानवाधिकार, महिला एवं बाल अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, सरकारी योजनाएँ, रोजगारएँ सामाजिक सेवा तथा राजस्थान की महत्वपूर्ण पंचपदरा रिफाइनरी परियोजना पर विशेष सामग्री शामिल की है। हमारा प्रयास है कि पाठकों को केवल समाचार ही नहीं, बल्कि उपयोगी, प्रेरक और तथ्यपरक जानकारी भी प्राप्त हो। वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों से सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं। ऐसे में सत्यएँ निष्पक्षता और जिम्मेदार पत्रकारिता का महत्व और भी बढ़ जाता है। हमारा प्रयास रहेगा कि प्रत्येक समाचार की सत्यताएँ सामाजिक उपयोगिता और जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

नवधृति मानवाधिकार समाचार केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि समाज, प्रशासन और आम नागरिकों के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम बनने का प्रयास है। हमारा उद्देश्य है कि समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज़ भी सम्मानपूर्वक सामने आए और सकारात्मक कार्यों को उचित स्थान मिले। हम अपने सभी पाठकों, संवाददाताओं, लेखकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। आप सभी के सहयोग से यह पत्रिका निरंतर आगे बढ़ रही है। हम आपसे आग्रह करते हैं कि अपने क्षेत्र की सकारात्मक खबरें, सामाजिक पहल, जनहित के मुद्दे और प्रेरक कार्य हमें भेजें ताकि उन्हें व्यापक स्तर पर प्रकाशित किया जा सके।

आइए, इस जुलाई हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि मानवता, न्याय, सेवा, पर्यावरण संरक्षण, महिला सम्मान, बाल सुरक्षा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएँ। यही सच्चे अर्थों में मानवाधिकारों का सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन होगा। आप सभी को जुलाई माह के पावन पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

—सम्पादक

नवधृति मानवाधिकार समाचार, जयपुर

हनुमानगढ़ जिला- 12 जुलाई 1994



इतिहास—

हनुमानगढ़ जिला 12 जुलाई 1994 को गंगानगर जिले से अलग होकर राजस्थान राज्य का 31वां जिला बना। बीकानेर डिवीजन के गंगानगर जिले की सात तहसीलों-संगरिया, टिब्बी, हनुमानगढ़, पीलीबंगा, रावतसर, नोहर और भादरा- को नए बने हनुमानगढ़ जिले में शामिल किया गया। जिले का मुख्यालय हनुमानगढ़, घग्गर नदी के किनारे बसा है, जो प्राचीन पौराणिक नदी सरस्वती का ही वर्तमान रूप है। घग्गर नदी, जिसे स्थानीय भाषा में 'नाली' कहा जाता है, जिला मुख्यालय को दो हिस्सों में बांटती है।

घग्गर नदी के उत्तर में हनुमानगढ़ शहर और दक्षिण में हनुमानगढ़ जंक्शन की बस्ती बसी है। हनुमानगढ़ जंक्शन व्यापारिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र है और जिला कलेक्टर के कार्यालय सहित सभी मुख्य दफ्तर यहीं स्थित हैं। पहले हनुमानगढ़ 'भाटी' राजपूतों का राज्य हुआ करता था। इसे 1295 ईस्वी में जैसलमेर के भाटी राजा के बेटे भूपत ने बनवाया था। भूपत ने अपने पिता की याद में इसका नाम 'भटनेर' रखा। भटनेर का सबसे ज्यादा महत्व दिल्ली-मुल्तान हाईवे पर स्थित होने के कारण था। मध्य एशिया, सिंध और काबुल के व्यापारी

भटनेर होते हुए दिल्ली और आगरा की यात्रा करते थे।

1805 में, बीकानेर के राजा सूरत सिंह ने भाटियों को हराकर भटनेर पर कब्जा कर लिया। जीत का दिन मंगलवार था, जो भगवान हनुमान का दिन माना जाता है, इसलिए भटनेर का नाम बदलकर हनुमानगढ़ रख दिया गया। ऐतिहासिक और पुरातात्विक नज़रिए से इस जिले का अपना महत्व है। कालीबंगा और पल्लू में हुई खुदाई से प्राचीन सभ्यताओं का पता चला है, जो अलग-अलग युगों में हुए बदलावों को दर्शाती हैं। जिले में 100 से ज्यादा 'टीले' हैं, जिनके नीचे प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष दबे हुए हैं।

ज़बरदस्त तबाही के कारण कई गाँव और शहर इन टीलों के नीचे दब गए। 1951 में कालीबंगा में हुई खुदाई से सिंधु घाटी की प्राचीन सभ्यता के होने का प्रमाण मिला है। अपनी हालिया शोध में डॉ. जी.एस. देवरा ने यह साबित किया है कि मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुई ऐतिहासिक तराइन की लड़ाई असल में हनुमानगढ़ जिले की तलवाड़ा झील के इलाके में हुई थी। उस समय के लेखकों ने तलवाड़ा झील को 'मौज-ए-आब' और भटनेर किले को 'तवार हिंद' किला बताया है।

अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस

न्याय, शांति और मानव गरिमा का वैश्विक संकल्प

भूमिका—

मानव सभ्यता के विकास में न्याय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। न्याय वह आधार है, जिस पर किसी भी सभ्य, लोकतांत्रिक और शांतिपूर्ण समाज की संरचना खड़ी होती है। यदि समाज में न्याय न हो तो कानून का सम्मान समाप्त हो जाता है, मानवाधिकारों का हनन बढ़ता है और अशांति का वातावरण पैदा होता है। इसी उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 17 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस मनाया जाता है। यह दिवस विश्व समुदाय को न्याय, मानवाधिकारों की रक्षाएँ कानून के शासन तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व का स्मरण कराता है।

इतिहास—

17 जुलाई 1998 को इटली की राजधानी रोम में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में रोम संधि (Rome Statute) को स्वीकार किया गया। इसी संधि के आधार पर International Criminal Court की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसने 1 जुलाई 2002 से कार्य करना प्रारंभ किया। यह न्यायालय युद्ध अपराधएँ मानवता के विरुद्ध अपराध, नरसंहार तथा आक्रामकता जैसे गंभीर अंतर्राष्ट्रीय अपराधों की सुनवाई करता है। इसी ऐतिहासिक उपलब्धि की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 17 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय न्याय का महत्व—

आज विश्व पहले की तुलना में अधिक जुड़ा हुआ है। ऐसे में यदि किसी देश में बड़े पैमाने पर मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है या युद्ध के दौरान निर्दोष लोगों पर अत्याचार किए जाते हैं, तो उसका प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय न्याय व्यवस्था यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि कोई भी अपराधी केवल सीमा या सत्ता के कारण दंड से बच न सके। न्याय का उद्देश्य केवल अपराधियों को दंड देना ही नहीं, बल्कि पीड़ितों को

सम्मान, सुरक्षा और न्याय दिलाना भी है।

न्याय और मानवाधिकार—

मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति के जन्मसिद्ध अधिकार हैं। जीवन, स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा, अभिव्यक्ति और गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार प्रत्येक मानव को प्राप्त है। जब इन अधिकारों का उल्लंघन होता है, तब न्याय व्यवस्था ही पीड़ितों की आशा बनती है। अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस हमें यह संदेश देता है कि जाति, धर्म, भाषा, लिंग, राष्ट्रीयता या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को समान न्याय मिलना चाहिए।

वर्तमान समय में प्रासंगिकता—

आज विश्व आतंकवाद, युद्ध, शरणार्थी संकट, मानव तस्करी, साइबर अपराध और मानवाधिकार उल्लंघन जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन परिस्थितियों में अंतर्राष्ट्रीय न्याय की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है। यह दिवस देशों को परस्पर सहयोग, कानून के सम्मान और शांति स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही यह नागरिकों को भी जागरूक करता है कि वे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाएँ और कानून का पालन करें।

भारत की दृष्टि—

भारत का संविधान न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों पर आधारित है। संविधान की प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय को राष्ट्र का मूल उद्देश्य माना गया है। भारतीय न्यायपालिका नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने तथा संविधान की गरिमा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस हमें अपने देश की न्याय व्यवस्था को और अधिक सुलभ, पारदर्शी तथा प्रभावी बनाने की प्रेरणा भी देता है।

हमारी जिम्मेदारी — न्याय केवल न्यायालयों तक सीमित नहीं है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सत्य, ईमानदारी और निष्पक्षता का पालन करे, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे, किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध करें तथा समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखने में सहयोग दें। छोटे-छोटे स्तर पर किया गया न्यायपूर्ण व्यवहार ही बड़े स्तर पर न्यायपूर्ण समाज की नींव रखता है।

उपसंहार — अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस हमें यह विश्वास दिलाता है कि न्याय ही स्थायी शांति और मानव विकास का सबसे मजबूत आधार है। यह दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि पूरी मानवता के प्रति हमारी जिम्मेदारी का प्रतीक है। आइए, हम संकल्प लें कि अपने जीवन में सत्य, समानता, मानवाधिकारों के सम्मान और न्याय के मूल्यों को अपनाएँ तथा एक ऐसे विश्व के निर्माण में योगदान देंगे जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के न्याय और सम्मान प्राप्त हो।



खूब सुनी परिवार और समाज की खरी खोटी पर डटी रहीं

कहानी भारत की पहली महिला डॉक्टर की

हमारे समाज में डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया गया है, किसी भी हारी बीमारी में हम पहले डॉक्टर के भरोसे रहते हैं और उसके बाद भगवान याद आते हैं। हर साल डॉक्टर की इसी अहमियत को ध्यान में रखते हुए नेशनल डॉक्टर डे मनाया जाता है, पर कभी आपने सोचा है कि भारत की पहली डॉक्टर कौन थी और वो डॉक्टर कैसे बनीं? चलिए आज इतिहास के पन्नों में दर्ज भारत की पहली महिला डॉक्टर अनसुनी कहानी जानते हैं।

भारत की पहली महिला डॉक्टर —

भारत की पहली महिला डॉक्टर आनंदीबाई जोशी थीं। एक पुरुष प्रधान देश में पहली महिला डॉक्टर होना उस समय बड़ी बात थी। 31 मार्च, 1865 को पुणे के जमींदार परिवार में जन्मी डॉण जोशी को शादी से पहले यमुना कहकर बुलाया करते थे। ये वो समय था जब शादी के बाद लकियों के सरनेम के साथ नाम तक बदल दिया जाता था।

फिर आनंदीबाई की शादी भी बहुत जल्दी हुई, क्योंकि महज 9 साल की उम्र में उनकी शादी 16 साल बड़े गोपालराव से करवा दी गई। यह गोपालराव की दूसरी शादी थी क्योंकि उनकी पहली पत्नी का निधन हो गया था। शादी जल्दी होने के कारण उन्होंने महज 14 साल की उम्र में नवजात शिशु को भी जन्म दे दिया, पर 10 दिन के अंदर उसकी मौत हो गई।

बच्चे की मौत ने तैयार किया डॉक्टर बनने का रास्ता — आनंदीबाई के 10 दिन के बच्चे की मौत ने उन्हें डॉक्टर बनने के लिए आगे का रास्ता दिखाया। उन्होंने इस बात पर गौर किया कि अगर उनके बच्चे को कोई बीमारी न होती तो वह आज जिंदा होता। इसी सोच ने उन्हें डॉक्टर बनने के लिए प्रेरित किया ताकि कोई भी बच्चा बीमारी से

अपनी जान न गंवाए।

गहने बेचकर की पढ़ाई —

सबसे बड़ी बात कि भले ही परिवार और समाज ने आनंदीबाई को उनके इस काम के लिए खूब खरी खोटी सुनाई हो, लेकिन उनके पट्टी गोपालराव ने साथ नहीं छोड़ा। आनंदीबाई को अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए गहने तक बेचने पड़े थे, पर उन्होंने पढ़ाई बीच में नहीं छोड़ी।

एमडी की डिग्री हासिल करने वाली पहली महिला बनीं —

आनंदीबाई ने भारत से नहीं बल्कि पेंसिलवेनिया के वुमन मेडिकल कॉलेज से डिग्री हासिल की और इस तरह वो 19 साल की उम्र में डॉक्टर ऑफ मेडिसिन की डिग्री पूरी करने वाली पहली महिला बनीं। बताते चलें कि आनंदीबाई ने फिर भारत लौटकर कोल्हापुर रियासत के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल के महिला वार्ड में प्रभारी चिकित्सक पद पर अपनी सेवाएं दी थीं।



चन्द्रमा पर पहली बार मनुष्य के कदम

भूमिका—

मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु रहा है। आदिकाल से ही उसने आकाश की ओर देखकर तारों, ग्रहों और चन्द्रमा के रहस्यों को जानने का प्रयास किया। चन्द्रमा सदियों तक कवियों की कल्पनाएँ वैज्ञानिकों के शोध और मानव की आकांक्षाओं का केंद्र बना रहा। अंततः 20 जुलाई 1969 का वह ऐतिहासिक दिन आया, जब मानव ने पहली बार चन्द्रमा की धरती पर कदम रखकर इतिहास रच दिया। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के अपोलो-11 मिशन के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रमा पर पहला कदम रखते हुए कहा था—

"That's one small step for a man, one giant leap for mankind."

अर्थात्, 'यह एक मनुष्य का छोटा-सा कदम है, लेकिन पूरी मानव जाति के लिए एक बहुत बड़ी छलांग है।'

आज इस ऐतिहासिक घटना की वर्षगांठ केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि का स्मरण नहीं है, बल्कि यह मानव साहस, ज्ञान, तकनीक और दृढ़ संकल्प का उत्सव भी है।

चन्द्रमा के प्रति मानव का आकर्षण—

चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। प्राचीन काल से ही यह मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय संस्कृति में चन्द्रमा का धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व अत्यंत गहरा है। कवियों ने इसे सौंदर्य का प्रतीक माना, वैज्ञानिकों ने अध्ययन का विषय बनाया और बच्चों ने इसे अपना 'चंदा मामा' कहा।

विज्ञान के विकास के साथ यह प्रश्न उठने लगा कि क्या मनुष्य कभी चन्द्रमा तक पहुँच सकेगा? यह कल्पना लंबे समय तक असंभव लगती रही, किंतु वैज्ञानिकों ने इसे संभव कर दिखाया।

अंतरिक्ष दौड़ की शुरुआत—

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और तत्कालीन सोवियत संघ के बीच वैज्ञानिक और तकनीकी प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हुई, जिसे 'स्पेस रेस' कहा जाता है। 1957 में सोवियत संघ ने स्पुतनिक-1 नामक पहला कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा।

इसके बाद यूरी गागरिन 1961 में अंतरिक्ष में जाने वाले पहले मानव बने।

इन उपलब्धियों के बाद अमेरिका ने चन्द्रमा पर मानव भेजने का लक्ष्य निर्धारित किया। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने 1961 में घोषणा की कि दशक समाप्त होने से पहले अमेरिका मनुष्य को चन्द्रमा पर भेजेगा और सुरक्षित वापस लाएगा। यह लक्ष्य कठिन अवश्य था, पर असंभव नहीं।

अपोलो-11 मिशन—

16 जुलाई 1969 को सैटर्न-ट रॉकेट द्वारा अपोलो-11 मिशन प्रक्षेपित किया गया। इस मिशन में तीन अंतरिक्ष यात्री थे—

नील आर्मस्ट्रांग - मिशन कमांडर

बज़ एल्ड्रिन - लूनर मॉड्यूल पायलट

माइकल कॉलिनस - कमांड मॉड्यूल पायलट

चार दिन की अंतरिक्ष यात्रा के बाद 20 जुलाई 1969 को 'ईगल' नामक लूनर मॉड्यूल चन्द्रमा की सतह पर उतरा। कुछ घंटों बाद नील आर्मस्ट्रांग सीढ़ी से उतरकर चन्द्रमा पर कदम



रखने वाले पहले मानव बने। उनके लगभग 19 मिनट बाद बज एलिडन भी चन्द्रमा पर उतरे, जबकि माइकल कॉलिन्स चन्द्रमा की कक्षा में कमांड मॉड्यूल में रहे।

चन्द्रमा पर किए गए कार्य—

नील आर्मस्ट्रॉंग और बज एलिडन ने लगभग ढाई घंटे तक चन्द्रमा की सतह पर कार्य किया। उन्होंने—

- * चन्द्रमा की मिट्टी और चट्टानों के नमूने एकत्र किए।
- * अनेक वैज्ञानिक उपकरण स्थापित किए।
- * अमेरिकी ध्वज फहराया।
- * अनेक चित्र और वीडियो रिकॉर्ड किए।
- * सतह की संरचना का अध्ययन किया।

वे लगभग 21.5 किलोग्राम चन्द्र मिट्टी और चट्टानों के नमूने पृथ्वी पर लेकर आए, जिनका अध्ययन आज भी वैज्ञानिकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विज्ञान और तकनीक में क्रांतिकारी योगदान—

चन्द्रमा पर मानव के पहुँचने से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इस मिशन के लिए विकसित अनेक तकनीकों का उपयोग बाद में सामान्य जीवन में भी होने लगा। कंप्यूटर तकनीक, संचार प्रणाली, उपग्रह तकनीक, चिकित्सा उपकरण, हल्के एवं मजबूत पदार्थ, डिजिटल नियंत्रण प्रणाली और अनेक आधुनिक आविष्कारों को इस मिशन से प्रेरणा मिली। यह अभियान केवल चन्द्रमा तक पहुँचने का नहीं था, बल्कि इसने मानव सभ्यता को तकनीकी रूप से नई ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया।

मानव साहस और संकल्प का प्रतीक—

अपोलो-11 मिशन ने सिद्ध कर दिया कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयास निरंतर हों, तो असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं। लाखों वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों और कर्मचारियों के वर्षों के परिश्रम ने इस सफलता को जन्म दिया। यह उपलब्धि केवल अमेरिका की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति की उपलब्धि मानी जाती है। चन्द्रमा पर पहला कदम इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान, विज्ञान और सहयोग से मानव किसी भी चुनौती का सामना कर सकता है।

भारत और चन्द्रमा अभियान—

भारत ने भी चन्द्रमा के अध्ययन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसरो का चंद्रयान-1 मिशन 2008 में चन्द्रमा पर जल-

अणुओं की उपस्थिति का महत्वपूर्ण प्रमाण लेकर आया। इसके बाद चंद्रयान-2 ने अनेक वैज्ञानिक जानकारीयाँ प्रदान कीं।

23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 ने चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट लैंडिंग कर भारत को यह उपलब्धि प्राप्त करने वाला विश्व का पहला देश बना दिया। इससे भारत की वैज्ञानिक क्षमता का विश्वभर में सम्मान बढ़ा और नई पीढ़ी को विज्ञान के प्रति प्रेरणा मिली।

वर्तमान और भविष्य—

आज अनेक देश तथा निजी अंतरिक्ष कंपनियाँ चन्द्रमा पर नए अभियान चला रही हैं। भविष्य में चन्द्रमा पर स्थायी अनुसंधान केंद्र स्थापित करने, वहाँ उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन करने तथा उसे मंगल ग्रह जैसे दूरस्थ अभियानों के आधार केंद्र के रूप में विकसित करने की योजनाएँ बन रही हैं।

चन्द्रमा पर पुनः मानव भेजने के लिए विभिन्न अंतरिक्ष एजेंसियाँ आधुनिक तकनीकों के साथ कार्य कर रही हैं। इससे अंतरिक्ष विज्ञान के नए अध्याय खुलेंगे।

युवाओं के लिए प्रेरणा—

चन्द्रमा पर पहला कदम हमें सिखाता है कि बड़े सपने देखने चाहिए। विज्ञान, गणित, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में निरंतर परिश्रम करने से असंभव लक्ष्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं। आज के विद्यार्थी ही भविष्य के वैज्ञानिक, अभियंता और अंतरिक्ष यात्री बनेंगे। इसलिए उनमें वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और अनुसंधान की भावना विकसित करना समय की आवश्यकता है।

उपसंहार—

20 जुलाई 1969 मानव इतिहास का वह स्वर्णिम दिवस है जिसने यह सिद्ध कर दिया कि मनुष्य की कल्पना, साहस और वैज्ञानिक क्षमता की कोई सीमा नहीं है। चन्द्रमा पर पहला कदम केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के आत्मविश्वास, बुद्धिमत्ता और अदम्य इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि की वर्षगांठ हमें उन वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष यात्रियों को श्रद्धापूर्वक याद करने का अवसर देती है, जिनके अथक प्रयासों ने मानव के सपनों को साकार किया। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि ज्ञान, विज्ञान और नवाचार के मार्ग पर चलते हुए हम नई ऊँचाइयों को प्राप्त करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

धर्म जानकारी—



नवरात्रि हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो देवी दुर्गा की पूजा और आराधना के लिए मनाया जाता है। नवरात्रि के दौरान, देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है, जो शक्ति और साहस की प्रतीक हैं।

पांच मुख्य नवरात्रि—

1. **चैत्र नवरात्रि**— यह नवरात्रि चैत्र महीने में मनाई जाती है, जो हिंदू नववर्ष का पहला महीना होता है।
2. **गुप्त नवरात्रि (माघ नवरात्रि)**— यह नवरात्रि माघ महीने में मनाई जाती है, जो जनवरी-फरवरी के महीने में पड़ती है।
3. **आषाढ़ नवरात्रि (गुप्त नवरात्रि)**— यह नवरात्रि आषाढ़ महीने में मनाई जाती है, जो जून-जुलाई के महीने में पड़ती है।
4. **शारदीय नवरात्रि**— यह नवरात्रि आश्विन महीने में मनाई जाती है, जो सितंबर-अक्टूबर के महीने में पड़ती है।
5. **पौष नवरात्रि (शिशिर नवरात्रि)**— यह नवरात्रि पौष महीने में मनाई जाती है, जो दिसंबर-जनवरी के महीने में पड़ती है।

बारह नवरात्रि—

शाक्त परंपरा में वर्ष में चार नवरात्रि मनाई जाती है, जो इस प्रकार हैं—

1. **वासंत नवरात्रि (चैत्र नवरात्रि)**
2. **गुप्त नवरात्रि (माघ नवरात्रि)**
3. **आषाढ़ नवरात्रि (गुप्त नवरात्रि)**
4. **शारदीय नवरात्रि**

इसके अलावा, कुछ शाक्त परंपराओं में अन्य नवरात्रि भी मनाई

जाती हैं, जो इस प्रकार हैं—

- * **माघ गुप्त नवरात्रि**
- * **आषाढ़ गुप्त नवरात्रि**
- * **पौष नवरात्रि**
- * **फाल्गुन नवरात्रि**

इन नवरात्रि के दौरान शाक्त भक्त देवी दुर्गा की पूजा और आराधना करते हैं और अपने जीवन में शक्ति और साहस की कामना करते हैं।





गुरु पूर्णिमा

परिचय —

गुरु पूर्णिमा भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन ज्ञान, शिक्षा, संस्कार और आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने वाले गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की जाती है। भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ स्थान दिया गया है क्योंकि गुरु ही ज्ञान का प्रकाश देकर जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं।

गुरु पूर्णिमा क्यों मनाई जाती है —

इस दिन महर्षि वेदव्यास का जन्मदिवस माना जाता है। इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। महर्षि वेदव्यास ने भारतीय संस्कृति को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

चारों वेदों का विभाजन एवं संकलन —

महाभारत की रचना

18 पुराणों का संकलन

ब्रह्मसूत्र की रचना

श्रीमद्भगवत महापुराण का प्रणयन, इसी कारण उन्हें आदि गुरु कहा जाता है।

गुरु का महत्व —

भारतीय संस्कृति में गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन के मार्गदर्शक माने जाते हैं।

प्रसिद्ध श्लोक —

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अर्थ: गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान हैं। वे ही परम सत्य का मार्ग दिखाते हैं।

गुरु पूर्णिमा का धार्मिक महत्व —

गुरु के प्रति सम्मान और कृतज्ञता का दिन। ज्ञान और आध्यात्मिक साधना का विशेष अवसर। इस दिन गुरु का आशीर्वाद लेना अत्यंत शुभ माना जाता है। अनेक आश्रमों और मंदिरों में विशेष पूजा एवं सत्संग आयोजित होते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों का सम्मान करते हैं।

आध्यात्मिक महत्व —

गुरुपूर्णिमा आत्मचिंतन, आत्मविकास और आत्मशुद्धि का पर्व है, इस दिन लोग ध्यान करते हैं, योगाभ्यास करते हैं, सत्संग सुनते हैं। धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते हैं। सेवा कार्यों में भाग लेते हैं।

सामाजिक महत्व —

गुरु पूर्णिमा केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों का भी उत्सव है। यह पर्व सिखाता है- गुरु का सम्मान करें। माता-पिता का आदर करें। शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ रहें। ज्ञान का सदुपयोग करें। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ।

गुरु पूर्णिमा कैसे मनाई जाती है? —

गुरु पूजन एवं चरण वंदना। पुष्प, फल, वस्त्र एवं दक्षिणा अर्पित करना। धार्मिक प्रवचन एवं सत्संग। गरीबों को भोजन एवं वस्त्र दान। वृक्षारोपण एवं सेवा कार्य। विद्यालयों में सम्मान समारोह।

मानवाधिकार के संदर्भ में गुरु पूर्णिमा —

गुरु समाज को सत्य, न्याय, समानता और मानवता का मार्ग दिखाते हैं। एक सच्चा गुरु व्यक्ति को केवल शिक्षित नहीं करता, बल्कि उसे जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी देता है।

गुरु पूर्णिमा हमें प्रेरित करती है कि सभी को शिक्षा का अधिकार मिले। ज्ञान का उपयोग मानव कल्याण के लिए हो।

समाज में नैतिकता और संवेदनशीलता बढ़े। सेवा और सद्भाव को जीवन का आधार बनाया जाए।

प्रेरक संदेश —

‘गुरु केवल ज्ञान नहीं देते, वे जीवन जीने की कला सिखाते हैं। गुरु का सम्मान करना हमारी संस्कृति, संस्कार और मानवता का सम्मान करना है।’

गुरु पूर्णिमा का संदेश —

‘गुरु वह दीपक हैं जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर अपने गुरुजनों का सम्मान करें, शिक्षा का प्रसार करें और मानवता की सेवा का संकल्प लें।’

प्रेरक कथा —

सफलता का सूत्र

जो लोग अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए दूसरों की मदद का इंतजार करते हैं, वे कभी भी आत्म निर्भर नहीं बन पाते हैं। ऐसे लोगों को सफलता आसानी से नहीं मिल पाती है। इस सम्बंध में एक लोक प्रचलित है। कथा के अनुसार पुराने समय में एक आश्रम में गुरु अपने शिष्यों के साथ रहते थे। वे हमेशा यही सीख देते थे कि हमें अपना काम खुद करना चाहिए, कभी भी दूसरों से मदद लेने के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए। सभी शिष्यों को भी ये बात अच्छी तरह ध्यान थी।

एक दिन गुरु अपने शिष्यों के साथ दूसरे गांव जा रहे थे। रास्ते में एक नाला भी था। गुरु और शिष्यों को उस नाले को पार करके दूसरे गांव जाना था। जब गुरु के साथ सभी शिष्य नाला पार कर रहे थे, तभी गुरु के हाथ से कमंडल छुट गया और नाले में गिर गया।

गुरु वहीं रुक गए। सभी शिष्य सोचने लगे कि अब ये कमंडल कैसे निकालेंगे? इसे कौन निकालेगा? तभी एक शिष्य गांव में किसी सफाईकर्मी को खोजने के लिए चला गया। बाकी सारे शिष्य वहीं बैठ गए और कमंडल निकालने की योजना बनाने लगे। ये देखकर गुरु को बहुत दुख हुआ। क्योंकि, उन्होंने सिखाया था कि अपना काम स्वयं करना चाहिए। किसी दूसरे की मदद के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए। कमंडल गुरु भी निकाल

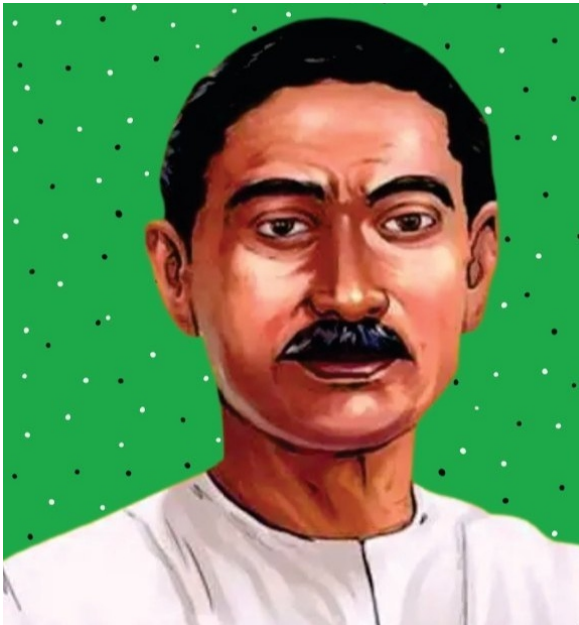
सकते थे, लेकिन वे शिष्यों की परीक्षा लेना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने कमंडल नहीं निकाला। वे सिर्फ ये सब देख रहे थे।

काफी देर बाद एक शिष्य उठा और नाले में हाथ डालकर कमंडल खोजने लगा। जब हाथ डालने के बाद भी कमंडल नहीं मिला तो वह स्वयं नाले में उतर गया और कमंडल खोज निकाला। ये देखकर गुरु प्रसन्न हो गए, क्योंकि शिष्य ने उनकी सीख को अपने जीवन में उतार लिया था।

संत ने उस शिष्य की प्रशंसा की और कहा कि इसी तरह हमें अपने कामों के लिए किसी दूसरे की मदद का इंतजार नहीं करना चाहिए। जो लोग दूसरों के भरोसे बैठे रहते हैं, वे कभी भी अपनी समस्याओं को हल नहीं कर पाते हैं और अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। अपनी मदद खुद करने वाले लोग ही घर-परिवार और समाज में सम्मान हासिल करते हैं। यही सफलता का सूत्र है।



31 जुलाई : मुंशी प्रेमचंद की जयंती



प्रस्तावना—

मुंशी प्रेमचंद (जन्म- 31 जुलाई, 1880, मृत्यु- 8 अक्टूबर] 1936) भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं, जिनके युग का विस्तार सन 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्त्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम नई मंजिलों से गुजरा। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ।

जन्म और विवाह—

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गांव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थी।

प्रेमचंद का बचपन गांव में बीता था। प्रेमचंद का कुल दरिद्र कायस्थों का था, जिनके पास करीब छः बीघा जमीन थी और जिनका परिवार बड़ा था। प्रेमचंद के पितामह, मुंशी गुरुसहाय लाल ए पटवारी थे। उनके पिता, मुंशी अजायब लाल, डाकमुंशी थे और उनका वेतन लगभग पच्चीस रुपए मासिक था। उनकी मां आनन्द देवी सुन्दर सुशील और सुघड़ महिला थीं। जब प्रेमचंद पंद्रह वर्ष के थे, उनका विवाह हो गया। वह विवाह उनके सौतेले नाना ने तय किया था। सन 1905 के अंतिम दिनों में आपने शिवरानी देवी से शादी कर ली। शिवरानी देवी बाल-विधवा थीं। यह कहा जा सकता है कि दूसरी शादी के पश्चात् इनके जीवन में परिस्थितियां कुछ बदली और आय की आर्थिक तंगी कम हुई। इनके लेखन में अधिक सजगता आई। प्रेमचन्द की पदोन्नति हुई तथा यह स्कूलों के डिप्टी इन्स्पेक्टर बना दिए गए।

शिक्षा—

गरीबी से लड़ते हुए प्रेमचंद ने अपनी पढ़ाई मैट्रिक तक पहुंचाई। जीवन के आरंभ में ही इन्हें गांव से दूर वाराणसी पढ़ने के लिए नंगे पांव जाना पड़ता था। इसी बीच में इनके पिता का देहान्त हो गया। प्रेमचंद को पढ़ने का शौक था, आगे चलकर वह वकील बनना चाहते थे, मगर गरीबी ने इन्हें तोड़ दिया। प्रेमचंद ने स्कूल आने-जाने के झंझट से बचने के लिए एक वकील साहब के यहां ट्यूशन ले लिया और उसी के घर में एक कमरा लेकर रहने लगे। इनको ट्यूशन का पांच रुपया मिलता था। पांच रुपए में से तीन रुपए घर वालों को और दो रुपए से प्रेमचंद अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे। प्रेमचन्द महीना भर तंगी और अभाव का जीवन बिताते थे। इन्हीं जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचन्द ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी।

साहित्यिक जीवन—

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षों बाद उन्होंने यह नाम अपनाया था। उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरम्भ किया, तब उन्होंने नवाब राय नाम अपनाया। बहुत से मित्र उन्हें जीवन-पर्यन्त नवाब के नाम से ही सम्बोधित करते रहे। जब सरकार ने उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोजे वतन' जब्त किया, तब उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। बाद का उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ। इसी काल में प्रेमचंद ने कथा-साहित्य बड़े मनोयोग से पढ़ना शुरू किया। एक तम्बाकू-विक्रेता की दुकान में उन्होंने कहानियों के अक्षय भण्डार, 'तिलिस्मे होशरूबा' का पाठ सुना। इस पौराणिक गाथा के लेखक फैजी बताए जाते हैं, जिन्होंने अकबर के मनोरंजन के लिए ये कथाएं लिखी थीं। एक पूरे वर्ष प्रेमचंद ये कहानियां सुनते रहे और इन्हें सुनकर उनकी कल्पना को बड़ी उत्तेजना मिली। कथा साहित्य की अन्य अमूल्य कृतियां भी प्रेमचंद ने पढ़ीं। इनमें 'सरशार' की कृतियां और रेनाल्ड की 'लन्दन-रहस्य' भी थी।

साहित्य की विशेषताएं—

प्रेमचंद की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं।

कृतियां—

प्रेमचंद की कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की

पदवी मिल गई थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हजारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे। लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है।

पुरस्कार—

मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहां प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिचित्र है। यहां उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहां उनकी एक आवक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में नाम से उनकी जीवनी लिखी और उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया है, जिससे लोग अनभिज्ञ थे। उनके ही बेटे अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेजी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियां लोकप्रिय हुई हैं।

उपसंहार—

प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अदभूत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही उनके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य-सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

लोकमान्य तिलक जयंती, 23 जुलाई स्वतंत्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता

भारत के स्वतंत्रता सेनानियों में अग्रणी रहे बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरि के चिक्कन गांव में 23 जुलाई 1856 को जन्म हुआ था। उनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे।

बाल गंगाधर तिलक बचपन से बहुत परिश्रमी थे तथा उनके इसी परिश्रम के बल पर स्कूल के मेधावी छात्रों में की गिनती होती थी। वे पढ़ने के साथ-साथ प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम भी करते थे। अतः वे शरीर स्वस्थ और पुष्ट थे। उन्होंने सन 1879 में बीए तथा कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनके परिवार वाले और मित्र-संबंधी यही आशा कर रहे थे कि तिलक वकालत करके खूब धन कमाएंगे और वंश के गौरव को बढ़ाएंगे, परंतु तिलक ने प्रारंभ से ही जनता की सेवा का व्रत धारण कर लिया था। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने अपनी सेवाएं पूर्ण रूप से एक शिक्षण संस्था के निर्माण को दे दीं। सन 1880 में न्यू इंग्लिश स्कूल और कुछ साल बाद फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना की।

जब तिलक जी ने वकालत पास की, तो उनके मित्रों सरकारी नौकरी अथवा वकालत के बारे में चर्चा की तो वे बोले— 'मैं पैसे का लोभी नहीं हूं। पैसे के लिए मैं सरकार का गुलाम बनना पसंद नहीं करता। रही वकालत की बात, तो मुझे यह पेशा भी पसंद नहीं। मैं तो 'सा विद्या या विमुक्तये' यानी 'विद्या वह जो मुक्ति देवे' इस सूक्ति को मानता हूं। जो विद्या मनुष्य को असत्याचरण की ओर प्रवृत्त करती है, उसे मैं विद्या ही नहीं मानता।'

मित्र चुप रहे, किंतु कुछ दिनों पश्चात् जब उन्हें पता चला कि तिलक जी 30 रुपए मासिक वेतन पर प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, तो उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उनके एक घनिष्ठ मित्र से न रहा गया और वह बोला- 'आखिर तुमने गुरुजी का पेशा ही क्यों चुना? तुम भलीभांति जानते हो कि आजकल

शिक्षकों की आर्थिक स्थिति कैसी है? अरे, तुम जब मरोगे, तो दाह-संस्कार के लिए, तुम्हारे घर में लकड़ियां तक न मिलेंगी।'

इस बात पर तिलक जी ने हंस कर जवाब दिया- 'मेरे दाह-संस्कार की चिंता मैं क्यों करूं, हमारी नगरपालिका क्यों बनी हुई है? मेरी चिंता उसे होगी वही सामग्री जुटाएगी और उससे मेरी चिंता जलेगी।' उनकी बात यह सुनते ही मित्र अवाक् रह गया।



भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वे पहले लोकप्रिय नेता थे। उन्होंने सबसे पहले ब्रिटिश राज के दौरान पूर्ण स्वराज की मांग उठाई। लोकमान्य तिलक ने जनजागृति कार्यक्रम पूरा करने के लिए महाराष्ट्र में गणेश उत्सव तथा शिवाजी उत्सव सप्ताह भर मनाना प्रारंभ किया। इन त्योहारों के माध्यम से जनता में देशप्रेम और अंग्रेजों के अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष का साहस भरा गया। सच्चे जननायक तिलक को लोगों ने आदर से लोकमान्य की पदवी दी थी।

लोकमान्य तिलक के क्रांतिकारी कदमों से अंग्रेज बौखला गए और उन पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाकर 6 साल के लिए 'देश निकाला' का दिया और बर्मा की मांडले जेल भेज दिया गया। इस अवधि में तिलक ने गीता का अध्ययन किया और 'गीता रहस्य' नामक भाष्य भी लिखा। तिलक के जेल से छूटने के बाद जब उनका 'गीता रहस्य' प्रकाशित हुआ तो उसका प्रचार-प्रसार आंधी-तूफान की तरह बढ़ा और जनमानस उससे अत्यधिक आंदोलित हुआ।

उन्होंने मराठी में 'मराठा दर्पण' व 'केसरी' नाम से दो दैनिक समाचार पत्र शुरू किए, जो जनता में काफी लोकप्रिय हुए। जिसमें तिलक ने अंग्रेजी शासन की क्रूरता और भारतीय संस्कृति के प्रति हीनभावना की बहुत आलोचना की। ऐसे वीर तथा जनता के बीच लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य तिलक का निधन 1 अगस्त 1920 को मुंबई में हुआ था। तिलक सही मायने में हिन्दुस्तान के एक प्रमुख नेता, समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे।

भारत का सबसे विशाल दुर्ग: चित्तौड़गढ़ दुर्ग

चित्तौड़गढ़ दुर्ग भारत का सबसे विशाल दुर्ग है। यह राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित है चित्तौड़ गढ़ के किले को मौर्य राजवंश के सम्राट चित्रांगद मौर्य ने बनवाया था। यह एक विश्व विरासत स्थल है। चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी थी।

यह इतिहास की सबसे खूनी लड़ाईयों का गवाह है। इसने तीन महान आख्यान और पराक्रम के कुछ सर्वाधिक वीरोचित कार्य देखे हैं जो अभी भी स्थानीय गायकों द्वारा गाए जाते हैं। चित्तौड़ के दुर्ग को 21 जून, 2013 में युनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया। चित्तौड़ दुर्ग को राजस्थान का गौरव एवं राजस्थान के सभी दुर्गों का सिरमौर भी कहते हैं।

ऐतिहासिकता तथा निर्माण—

इतिहासकारों के अनुसार इस किले का निर्माण मौर्यवंशीय राजा चित्रांगद मौर्या ने सातवीं शताब्दी में करवाया था और इसे अपने नाम पर चित्रकूट के रूप में बसाया। मेवाड़ के प्राचीन सिक्कों पर एक तरफ चित्रकूट नाम अंकित मिलता है। बाद में यह चित्तौड़ कहा जाने लगा। यह मेसा के पठार पर स्थित है। सन् 738 राजा बप्पा रावल ने राजपूताने पर राज्य करने वाले मौर्यवंश के अंतिम शासक मानमोरी को हराकर यह किला अपने अधिकार में कर लिया। फिर मालवा के परमार राजा मुंज ने इसे गुहिलवंशियों से छीनकर अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार 9वीं-10वीं शताब्दी में इस पर परमारों का आधिपत्य रहा। सन् 1133 में गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह (सिद्धराज) ने यशोवर्मन को हराकर परमारों से मालवा छीन लिया, जिसके कारण चित्तौड़गढ़ का दुर्ग भी सोलंकीयों के अधिकार में आ गया।

तदनंतर जयसिंह के उत्तराधिकारी कुमारपाल के भतीजे अजयपाल से वैवाहिक सम्बन्ध बना कर चित्तौड़गढ़ के राजा सामंत सिंह ने सन् 1174 के आसपास पुनः गुहिलवंशियों का आधिपत्य स्थापित कर दिया। इन्हीं राजा सामंत सिंह का पृथ्वीराज चौहान की बहन पृथ्वीबाई से हुआ। तराइन के द्वितीय युद्ध में सामंत सिंह की मृत्यु हो गयी। सन् 1213 से 1252 तक नागदा को इल्तुतमिश के द्वारा तहस-नहस कर देने पर के बाद यहाँ राजा जैत्र सिंह ने अपनी राजधानी चित्तौड़ से शासन चलाया। सन् 1303 में यहाँ के रावल रत्नसिंह की अलाउद्दीन

खिलजी से लड़ाई हुई। लड़ाई चित्तौड़ का प्रथम शाका के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस लड़ाई में अलाउद्दीन खिलजी की विजय हुई और उसने अपने पुत्र खिज्र खाँ को यह राज्य सौंप दिया खिज्र खाँ ने वापसी पर चित्तौड़ का राजकाज कान्हादेव के भाई मालदेव को सौंप दिया।

काल के बारे में निश्चित तौर पर कुछ कहना थोड़ा मुश्किल है। एक किंवदन्ती के अनुसार पाण्डवों के दूसरे नायक भाई भीम ने इसे करीब 5000 वर्ष पूर्व बनवाया था। इस संबंध में प्रचलित कहानी यह है कि एक बार भीम जब संपत्ति की खोज में निकला तो उसे रास्ते में एक योगी निर्भयनाथ व एक यति कुकड़ेश्वर से भेंट होती है। भीम ने योगी से पारस पत्थर मांगा, जिसे योगी इस शर्त पर देने को राजी हुआ कि वह इस पहाड़ी स्थान पर रातों-रात एक दुर्ग का निर्माण करवा दे। भीम ने अपने शौर्य और देवरूप भाइयों की सहायता से यह कार्य करीब-करीब समाप्त कर ही दिया थाए सिर्फ दक्षिणी हिस्से का थोड़ा-सा कार्य शेष था। योगी के हृदय में कपट ने स्थान ले लिया और उसने यति से मुर्गे की आवाज में बांग देने को कहा, जिससे भीम सवेरा समझकर निर्माण कार्य बंद कर दे और उसे पारस पत्थर नहीं देना पड़े। मुर्गे की बांग सुनते ही भीम को क्रोध आया और उसने क्रोध से अपनी एक लात जमीन पर दे मारी, जिससे वहाँ एक बड़ा सा गड्ढा बन गया, जिसे लोग भी लत तालाब के नाम से जानते हैं। वह स्थान जहाँ भीम के घुटने ने विश्राम किया, भीम-घोड़ी कहलाता है। जिस तालाब पर यति ने मुर्गे की बाँग की थी, वह कुकड़ेश्वर कहलाता है।

बप्पा रावल के वंशज जो सिसोदिया राजवंश (जो कि गुहिल वंश की ही एक शाखा है) के राणा हम्मीर ने पुनः मालदेव से यह किला हस्तगत किया। हमीर बड़ा पराक्रमी और दूरदर्शी था। उसने यहाँ 50 वर्षों तक बड़ी योग्यता से शासन करते हुए अपने राज्य का विस्तार किया। उसी के प्रयत्नों से चित्तौड़ का गौरव पुनः स्थापित हो सका। और रोड राज्य द्वारा स्थापित किया सन् 1538 में चित्तौड़ पर गुजरात के बहादुरशाह ने आक्रमण कर दिया। इस युद्ध को मेवाड़ का दूसरा शाका के रूप में जाना जाता है। सन् 1567 में मेवाड़ का तीसरा शाका हुआ, जिसमें अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी थी। ये सब

मुस्लिम आक्रमण चित्तौड़गढ़ की सांस्कृतिक विनाश का मुख्य कारणों में से एक है। तीसरे शाके के बाद ही सन् 1559 में महाराणा उदयसिंह ने मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ से हटाकर अरावली के मध्य पिछोला झील के पास स्थापित कर दी, जो आज उदयपुर के नाम से जाना जाता है।

चित्तौड़ के जौहर—

पहला जौहर रावल रतनसिंह के शासनकाल अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय 1303 में रानी पिद्मिनी रघुवंशी के नेतृत्व जौहर किया गया। दूसरा जौहर राणा विक्रमादित्य के शासनकाल में सन् 1534 ई. में गुजरात के शासक बहादुर शाह के आक्रमण के समय में रानी कर्णवती के नेतृत्व में 8 मार्च, 1534 ई. हुआ। तीसरा जौहर राणा उदयसिंह के शासनकाल में अकबर के आक्रमण के समय 25 फरवरी, 1568 में पत्ता सिसौदिया की पत्नी फूल कँवर के नेतृत्व में जौहर किया गया।

रणनीति के दृष्टिकोण से चित्तौड़गढ़ का

राजधानी के रूप में महत्व—

चित्तौड़गढ़ का किला राजपूताने में हमेशा एक विशेष महत्व रखता है। इसे मेवाड़ के गुहिलवंशियों की पहली राजधानी के रूप में सम्मान प्राप्त है, जिसे उन्होंने मौर्यवंश के अंतिम शासक मानमोनी को हराकर अपने अधिकार में कर लिया था। यह दुर्ग अरावली की पहाड़ी पर उत्तर से दक्षिण की ओर लंबाई में बना है, जिसमें बीच में समतल भूमि आ जाने के कारण एक कुंड,

तालाब, मंदिर, महल आदि सभी एक निश्चित निर्माण-योजना के तहत समय-समय पर बनते रहे हैं। कुछ जलाशय तो ऐसे हैं जो निरन्तर जलापूर्ति के साधन के रूप में काम आते रहे हैं। इस गढ़ के सम्बन्ध में प्रचलित एक कहावत है जो इस दुर्ग के महत्व को बताता है।

गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया—

वास्तव में इस दुर्ग का निर्माण अभी भी हमें विस्मय व रोमांच से भर देता है। लेकिन रणनीतिक दृष्टिकोण से देखने पर पता चलता है कि अपने भौगोलिक कारणों से यह दुर्ग युद्ध के लिए रणथंभौर और कुभलगढ़ जैसे दुर्गों की तरह उपयुक्त नहीं था। निःसंदेह किला सुदृढ़ था। पहाड़ी के किनारे-किनारे उदग्र खड़े चट्टानों की पंक्ति थी जिसके ऊपर एक ऊँचा और सुदृढ़ प्रकार बना हुआ था। साथ ही साथ दुर्ग में प्रवेश करने के लिए लगातार सात दरवाजे कुछ अन्तराल पर बनाए गये थे। इन सब कारणों से किले में प्रवेश कर पाना तो शत्रुओं के लिए बहुत ही मुश्किल था। परन्तु यह विस्तृत मैदान के बीच एक लम्बी पहाड़ी पर बना है जो अन्य पर्वत श्रेणियों से पृथक हो गया है। अतएव शत्रुओं द्वारा उसका घेरा डालकर किले में इस्तेमाल होने वाला रसद पहुँचाना सुगमता से रोक दिया जाता था।

इस दुर्ग का जब-जब घेरा डाला गया तब-तब गढ़ में भोजन-सामग्री विद्यमान रहने तक ही गढ़ सुरक्षित रहा। भोजनादि सामग्री खत्म होते ही राजपूतों को विवश होकर युद्ध



के लिए किले का द्वार खोल देना पड़ता था। लेकिन प्रायः शत्रुओं की बड़ी सेना होने की स्थिति में उन्हें हार का सामना करना पड़ता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि चित्तौड़गढ़ का राजधानी के रूप में चयन रणनीति की दृष्टि से उचित नहीं था और यही कारण था कि महाराणा उदय सिंह ने उदयपुर को अपनी स्तम्भ.. महाराणा कुम्भा द्वारा मालवा के सुल्तान पर विजय की स्मृति में बनवाया गया था। यह भवन स्थापत्य का अद्भुत नमूना है। 122 फीट ऊंचे स्तम्भ में नौ मंजिलें हैं तथा इसमें हिन्दू देवताओं की मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया गया है।

प्रवेश द्वार—

पाडन पोल— यह दुर्ग का प्रथम प्रवेश द्वार है। पाडन पोल मूल रूप से पाटन पोल कही जाती थी, गुजरात के सोलंकी शासक सिद्धराज और कुमारपाल के राज में इस पोल का निर्माण हुआ था और इस पोल की दिशा सोलंकीयों की राजधानी पाटन की तरफ थी और इस पोल से पाटन की ओर सीधा रास्ता जाता था। इसी कारण इस द्वार को पाडन/पाटन पोल कहा जाता है। जब चित्रकूट पराधीन हो गया तब यहाँ के वीर योद्धा गाडीलोहरों ने प्रतिज्ञा ली थी जब तक चित्रकूट स्वतंत्र न हो जाये तब तक वे—

1. इस दुर्ग पर नहीं चढेंगे,
2. घर बना कर नहीं रहेंगे
3. पिये के लिए पानी का रस्सा नहीं रखेंगे,
4. मिटटी के बर्तन में ही खायेगे... जैसी प्रतिज्ञा ली थी।

जन्म भूमि के प्रति देशभक्ति एवं स्वामी भक्ति की मिसाल कायम की और तब से अब ये स्वतंत्रता प्रेमी बेलगाडी में ही घर बना कर देश के कोने-कोने में तब से अब तक गुमनाम भटक रहे हैं कि गथा का प्राचीन सुरक्षित स्मारक पाडन पोल के समीप ही इन गाडी लोहारों की देश के प्रति देशभक्ति और बलिदान की गौरव गाथा को बताता है।

रावत बाघसिंह का स्मारक—

दुर्ग के प्रथम द्वार पाडन पोल के बाहर के चबूतरे पर ही रावत बाघसिंह का स्मारक बना हुआ है। महाराणा विक्रमादित्य के राज्यकाल में, सन् 1535 (विष् सं. 1591) में यहाँ की अव्यवस्था से प्रेरित हो गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। उस समय बालक होने के कारण हाड़ी रानी कर्मवती ने विक्रमादित्य व उदयसिंह को बूंदी भेजकर मेवाड़ के सरदारों को किले की रक्षा का कार्यभार सौंप दिया।

प्रतापगढ़ के रावत बाघसिंह ने मेवाड़ का राज्य चिन्ह धारण कर महाराणा विक्रमादित्य का प्रतिनिधित्व किया तथा लड़ता हुआ इसी दरवाजे के पास वीरगति को प्राप्त हुआ। उसी वीर की स्मृति में यह स्मारक बनाया गया है।

भैरव पोल (भैरों पोल)— पाडन पोल से थोड़ा उत्तर की तरफ चलने पर दूसरा दरवाजा आता है, जिसे भैरव पोल के रूप में जाना जाता है। इसका नाम के सोलंकी भैरोंदास नाथावत के नाम पर रखा गया है, जो सन् 1534 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह से युद्ध में अदम्य साहस दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। राणा उदय सिंह ने चित्तौड़गढ़ गुजरात सल्तनत से पूर्णविजय करने के बाद भैरव पोल का एवं भैरोंदास के थान का निर्माण करवाया। मूल द्वार टूट जाने के कारण महाराणा फतहसिंह जी ने इसका पुनर्निर्माण कराया था।

जयमल व कल्ला की छतरियाँ—

भैरव पोल के पास ही दाहिनी ओर दो छतरियाँ बनी हुई हैं। प्रथम चार स्तम्भों वाली छत्री प्रसिद्ध राठौड़ जैमल (जयमल बदनोर के राजा) के कुटुंबी कल्ला की है तथा दूसरी, छः स्तम्भों वाली छत्री स्वयं जैमल की है, जिसके पास ही दोनों राठौड़ मारे गये थे। सन् 1567 (वि.सं. 1624) में जब बादशाह अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर चढ़ाई की, उस समय सीसोदिया पता तथा मेड़तिया राठौर जैमल, दोनों महाराणा, उदयसिंह सिसोदिया की अनुपस्थिति में दुर्ग के रक्षक नियुक्त हुए थे। इसी तीसरे शाके की लड़ाई के दिनों में एक रात्रि जब जैमल एक टूटी दीवार की मरम्मत करा रहे थे, उस समय अकबर की गोली से उनकी एक टांग बेकार हो गयी। लंगड़े जैमल को कल्ला ने अपने कंधों पर बिठाकर दूसरे दिन के युद्ध में उतारा था। उन दोनों ने मिलकर शत्रु सेना पर कहर ढा दिया। अन्त में दोनों भिन्न-भिन्न स्थानों पर वीरगति को प्राप्त हो गये। ये छतरियाँ उन्हीं की गौरवगाथाओं की याद दिलाती हैं।

हनुमान पोल— दुर्ग के तृतीय प्रवेश द्वार को हनुमान पोल कहा जाता है। क्योंकि पास ही हनुमान जी का मंदिर है। हनुमान जी की प्रतिमा चमत्कारिक एवं दर्शनीय है।

गणेश पोल— हनुमान पोल से कुछ आगे बढ़कर दक्षिण की ओर मुड़ने पर गणेश पोल आता है, जो दुर्ग का चौथा द्वार है। इसके पास ही गणपति जी का मंदिर है।

जोड़ला पोल— यह दुर्ग का पाँचवां द्वार है और छठे द्वार के बिल्कुल पास होने के कारण इसे जोड़ला पोल कहा जाता है।

लक्ष्मण पोल— दुर्ग के इस छठे द्वार के पास एक छोटा लक्ष्मण जी का मंदिर है जिसके कारण इसका नाम लक्ष्मण पोल है।

राम पोल— लक्ष्मण पोल से आगे बढ़ने पर एक पश्चिमाभिमुख प्रवेश द्वार मिलता है, जिससे होकर किले के अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। यह दरवाजा किला का सातवां तथा अन्तिम प्रवेश द्वार है। इस दरवाजे के बाद चढ़ाई समाप्त हो जाती है। इसके निकट ही महाराणाओं के पूर्वज माने जाने वाले सूर्यवंशी भगवान श्री रामचन्द्र जी का मंदिर है। यह मंदिर भारतीय स्थापत्य कला एवं हिन्दू संस्कृति का उत्कृष्ट प्रतीक है। दरवाजे से प्रवेश करने के बाद उत्तर वाले मार्ग की ओर बस्ती है तथा दक्षिण की ओर जाने वाले मार्ग से किले के कई दर्शनीय स्थल दिखते हैं।

पत्ता का स्मारक— रामपोल में प्रवेश करते ही सामने की तरफ लगभग 50 कदम की दूरी पर स्थित चबूतरे पर सीसोदिया पत्ता के स्मारक का पत्थर है। आमेर के रावतों के पूर्वज पत्ता सन् 1568 में अकबर की सेना से लड़ते हुए इसी स्थान पर वीरगति को प्राप्त हुए थे।

कुंकड़ेश्वर का कुण्ड तथा कुंकड़ेश्वर का मंदिर—

रामपोल से प्रवेश करने के बाद सड़क उत्तर की ओर मुड़ती है। उससे थोड़ी ही दूरी पर दाहिनी ओर कुंकड़ेश्वर का कुंड स्थित है, जिसके ऊपर के भाग में कुंकड़ेश्वर का मंदिर बना हुआ है। किंवदन्तियों के अनुसार ये दोनों रचनाएं महाभारत कालीन है तथा पाण्डव पुत्र भीम से जुड़ी हैं।

हिंगलू आहाड़ा के महल तथा रत्नेश्वर तालाब—

कुंकड़ेश्वर मंदिर से आगे बढ़ने पर दाहिनी तरफ सड़क से कुछ दूर हिंगलू आहाड़ा के महल हैं। आहाड़ा में रहने के कारण मेवाड़ के राजाओं का उपनाम आहाड़ा हुआ। डूंगरपुर तथा बांसवाड़े के राजा भी आहाड़ा कहलाते रहे। हिंगलू, डूंगरपुर का आहाड़ा सरदार था और इन महलों में रहता था, जिससे ये महल हिंगलू आहाड़ा के महल कहलाये। बूंदीवालों का हाड़ा के रूप में नाम प्रसिद्ध हो जाने से लोग इन महलों को हिंगलू हाड़ा के महल कहने लगे। इन महलों में महाराणा रत्नसिंह रहते थे। इसके पास बना तालाब महाराणा ने खुद बनवाया था जो रत्नेश्वर का कुंड (रत्नेश्वर तालाब) के नाम से जानी जाती है। तालाब के पश्चिमी

किनारे पर रत्नेश्वर महादेव का एक प्राचीन मंदिर है।

लाखोटा की बारी—

रत्नेश्वर कुंड से थोड़ी दूर पर पहाड़ी के पूर्वी किनारे के समीप लाखोटा की बारी है। यह एक छोटा सा दरवाजा है, जिससे दुर्ग के नीचे जा सकते हैं। कहा जाता है कि इसी द्वार के पास मुगल की गोली से जयमल जी का पैर घायल हो गया था।

कीर्ति स्तम्भ—

जैन कीर्ति स्तम्भ— लाखोटा की बारी से राज टीले तक सड़क सीधी दक्षिण में मुड़ जाती है, उसी स्थान पर बायीं ओर 75 फीट ऊँचा, सात मंजिलों वाला एक स्तम्भ बना है, जिसका निर्माण चौदहवीं शताब्दी में दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के बघेरवाल महाजन सा नाय के पुत्र जीजा ने करवाया था। यह स्तम्भ नीचे से 30 फुट तथा ऊपरी हिस्से पर 15 फुट चौड़ा है तथा ऊपर की ओर जाने के लिए तंग नाल बनी हुई है। जैन कीर्ति स्तम्भ वास्तव में आदिनाथ का स्मारक है, जिसके चारों पार्श्व पर आदिनाथ की 5 फुट ऊँची दिगम्बर (नग्न) जैन मूर्ति खड़ी है तथा बाकी के भाग पर छोटी-छोटी जैन मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। इस स्तम्भ के ऊपर की छत्री बिजली गिरने से टूट गई थी तथा इससे इमारत को बड़ी हानि पहुँची थी। महाराणा फतह सिंह जी ने इस स्तम्भ की मरम्मत करवाई।

महावीर स्वामी का मंदिर— जैन कीर्ति स्तम्भ के निकट ही महावीर स्वामी का मन्दिर है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार महाराणा कुम्भा के राज्यकाल में ओसवाल महाजन गुणराज ने करवाया था। जीर्ण-शीर्ण अवस्था प्राप्त इस मंदिर का जीर्णोद्धार पुरातत्व विभाग ने किया है। इस मंदिर में कोई प्रतिमा नहीं है।

नीलकण्ठ महादेव का मंदिर— महावीर स्वामी के मंदिर आगे बढ़ने पर नीलकण्ठ महादेव का मंदिर आता है। कहा जाता है कि पांडवों ने अज्ञातवास के समय इस मंदिर की स्थापना की।

सूरजपोल तथा चूड़ावत साईं दास का स्मारक— नीलकण्ठ महादेव के मंदिर के बाद किले के पूरब की तरफ एक दरवाजा है, जो सूरज पोल के नाम से जाना जाता है। यहाँ से दुर्ग के नीचे मैदान में जाने के लिए एक रास्ता बना हुआ है। इस दरवाजे के पास ही एक चबूतरा बना है, जो संतूबर के चंडावत सरदार रावत साईंदास जी का स्मारक है। वे सन् 1568 में अकबर की सेना के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

अद्वुज्जी का मंदिर— रावत साईदास के स्मारक से दक्षिण की तरफ जाने पर दाहिनी ओर अद्वुज् (अद्वुतजी) का मंदिर है, जिसे महाराणा रायमल ने सन् 1494 में बनवाया था। जीर्ण-शीर्ण अवस्था प्राप्त इस मंदिर की स्थापत्य कला दर्शनीय है। मंदिर में शिवलिंग है तथा उसके पीछे दीवार पर महादेव की विशाल त्रिमूर्ति है, जो देखने में समीधेश्वर मंदिर की प्रतिमा से मिलती है। अद्वुत प्रतिमा के कारण ही इस मंदिर को अद्वुज् जी का मंदिर कहा जाता है।

राजटीला तथा चत्रंग तालाब— अद्वुज्जी के मंदिर से थोड़ी ही दूरी पर राजटीला नामक एक ऊँचा स्थान है। कहा जाता है कि यहीं पहले मौर्यवंशी शासक मान के महल थे। कुछ का मानना है कि प्राचीन काल में राजाओं का राज्याभिषेक इसी स्थान पर हुआ करता था। इस स्थान के पास से सड़क पश्चिम की ओर मुड़ जाती

है। सड़क के पश्चिमी सिरे के पास चित्रांगद मौर्य का निर्माण कराया हुआ तालाब है, जिसे चत्रंग कहते हैं। यहाँ से अनुमानतः पौने मील दक्षिण में चित्तौड़ की पहाड़ी समाप्त हो जाती है और उसके नीचे कुछ ही दूरी पर चित्तोड़ी नाम की एक छोटी पहाड़ी है। **चित्तौड़ी बूर्ज व मोहर मगरी**— दुर्ग का अंतिम दक्षिणी बूर्ज चित्तौड़ी बूर्ज कहलाता है और इस बूर्ज के 150 फीट नीचे एक छोटी-सी पहाड़ी (मिट्टी का टीला) दिखाई पड़ती है। यह टीला कृत्रिम है और कहा जाता है कि सन् 1567 ई. में अकबर ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया था, तब अधिक उपयुक्त मोर्चा इसी स्थान को माना और उस मगरी पर मिट्टी डलवा कर उसे ऊँचा उठावा, ताकि किले पर आक्रमण कर सके। प्रत्येक मजदूर को प्रत्येक मिट्टी की टोकरी हेतु एक-एक मोहर दी गई थी। अतः इसे मोहर मगरी कहा जाता है।



चित्तौड़गढ़ में घूमने के लिए टॉप 10 जगहें



चित्तौड़गढ़ किला



कीर्ति स्तंभ



राणा कुंभा पैलेस



विजय स्तम्भ



पद्मिनी का महल



फतेह प्रकाश पैलेस



काली माता मंदिर

सांवरियाजी मंदिर

BHUMI

MARKETING

Digital Ideas, Powerful Solutions

आज ही अपने व्यापार को बनाएं डिजिटल

Bhumi Marketing

YOUR GROWTH, OUR MISSION



अब समय है
अपने बिजनेस को
ऑनलाइन पहचान, अधिक ग्राहक
और अधिक बिक्री देने का।

- 9887700059
- www.bhumi.marketing
- Support@bhumi.marketing
- Whatsapp
- Google Map
- SMS
- Facebook
- Instagram
- Website
- E-mail

BHUMI MARKETING – आपकी डिजिटल सफलता का पूरा समाधान

01



WEBSITE DEVELOPMENT

- Custom Website Design
- Responsive Design
- User Friendly
- SEO Friendly

02



SEO SERVICES

- On-Page SEO
- Off-Page SEO
- Technical SEO
- Keyword Research

03



SOCIAL MEDIA MARKETING

- Page Management
- Content Creation
- Audience Engagement
- Brand Awareness

04



GOOGLE ADS

- Search Ads
- Display Ads
- Shopping Ads
- Lead Generation

05



META ADS

- Facebook Ads
- Instagram Ads
- Audience Targeting
- Retargeting Ads

06



CRM & IVR SERVICES

- Customer Management
- Lead Management
- IVR Setup & Management
- Business Automation

07



WHATSAPP API & AUTOMATION

- WhatsApp API Integration
- Auto Reply / Chatbot
- Bulk Messaging
- Smart Automation

08



BULK SMS RCS

- Transactional SMS
- Promotional SMS
- RCS Messaging
- Bulk SMS Campaign

OUR CORE SERVICES

1. Digital Marketing – ब्रांड को बढ़ाएं, ग्राहक बढ़ाएं, बिक्री बढ़ाएं।
2. Website Development – प्रोफेशनल वेबसाइट जो आपके बिजनेस को नई पहचान दे।
3. WhatsApp Marketing – सीधे ग्राहक से जुड़ें, तेजी से अपने संदेश पहुंचाएं।
4. C.R.M. (Customer Relationship Management) – ग्राहक संबंधों को मजबूत करें, बिजनेस बढ़ाएं।
5. I.V.R. (Interactive Voice Response) – प्रोफेशनल कॉल हैंडलिंग, बेहतर ग्राहक अनुभव।
6. Whatsapp API & Automation – ऑटोमेशन से समय बचाएं, बढ़ाएं प्रोडक्टिविटी।
7. Bulk SMS RCS (Transactional & Promotional) – एक साथ हजारों ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाएं।

Why

Bhumi Marketing?

- ✓ WhatsApp & WhatsApp API
- ✓ Google Business & Google Maps
- ✓ SMS & Email Marketing
- ✓ Facebook & Instagram Ads
- ✓ Website + CRM + IVR Integration

कम बजट में बेहतरीन परिणाम

- होटे व्यापार से लेकर बड़ी कंपनी तक समाधान
- लीड से लेकर सेल तक पूरा सिस्टम
- हर बिजनेस के लिए अलग डिजिटल रणनीति

आज ही अपने बिजनेस को डिजिटल बनाएं !



वेबसाइट



डिजिटल मार्केटिंग



ब्राउज़र अप ऑटोमेशन



CRM, IVR



लीड सिस्टम

- 9887700059
- www.bhumi.marketing
- Support@bhumi.marketing



आज ही
Free Consultation
हेतु कॉल करें-

9887700059

कैसे लाइफ स्टाइल में बदलाव करके डिमेंशिया के आधे मामलों को रोका जा सकता है, क्या कहती है नई रिसर्च ?

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में सेहत से जुड़ी कई चुनौतियां हमारे सामने आ रही हैं, जिनमें से एक बड़ी समस्या डिमेंशिया भी है। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और चीन समेत आठ देशों में डिमेंशिया से जुड़े पब्लिक हेल्थ कैपेन का एक नया विश्लेषण किया गया है। इस शोध से यह बेहद चौंकाने वाली वाली बात सामने आई है कि अगर हम अपनी कुछ आदतों और व्यवहार में बदलाव कर लें, तो डिमेंशिया के लगभग आधे मामलों को होने से रोका जा सकता है।

इन रिस्क फैक्टर्स को बदलकर कम करें जोखिम —

रिसर्च के अनुसार, डिमेंशिया के कई ऐसे रिस्क फैक्टर्स हैं, जिन्हें आसानी से बदला जा सकता है। अक्सर लोग इन बातों पर ध्यान नहीं देते, लेकिन ये हमारी मेंटल हेल्थ पर गहरा असर डालते हैं। एक्सरसाइज न करना या फिजिकल एक्टिविटी की कमी, सिगरेट या तंबाकू का इस्तेमाल, खान-पान में लापरवाही के कारण बढ़ता कोलेस्ट्रॉल, मेंटल स्ट्रेस और डिप्रेशन डिमेंशिया के खतरे को बढ़ा सकते हैं। इसलिए अगर इन आदतों में सुधार किया जाए, तो इस न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारी के खतरे को काफी हद तक टाला जा सकता है।

क्यों जागरूकता अभियान नहीं हो रहे सफल? —

शोधकर्ताओं का मानना है कि डिमेंशिया को लेकर बड़े

पैमाने पर चलाए जाने वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान बहुत से लोगों तक तो पहुंच जाते हैं, लेकिन ये लोगों के व्यवहार में बदलाव लाने में नाकाम साबित हो रहे हैं। इन अभियानों से लोगों की जानकारी में बहुत कम सुधार होता है और वे अपनी आदतों को नहीं बदलते।

व्यक्तिगत और सामुदायिक कोशिश है जरूरी —

ऑस्ट्रेलिया की कर्टिन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के मुताबिक, लोगों के व्यवहार में असली बदलाव लाने के लिए अब नए तरीकों की जरूरत है। इसके लिए ऐसे कदम उठाने होंगे जो लोगों को पर्सनल और सोशल लेवल पर जोड़ सकें।

स्टडी में पाया गया कि जब लोगों को शिक्षा और बातचीत पर आधारित उपायों से जोड़ा गया, तो उनके व्यवहार में लगातार सुधार देखा गया। अपने रिस्क फैक्टर्स को पहचानना, ऑन-लाइन कोर्स और ई-लर्निंग प्रोग्राम, कम्युनिटी बेस्ड तरीकों को अपनाने जैसे उपाय काफी कारगर साबित हो सकते हैं।

भविष्य के लिए बड़ी चेतावनी —

यह शोध इसलिए भी अहम है, क्योंकि डिमेंशिया में दुनिया भर के करीब 5.7 करोड़ लोगों को प्रभावित कर रहा है। अनुमान लगाया गया है कि साल 2050 तक यह संख्या बढ़कर तीन गुना हो जाएगी।



PSC Recruitment 2026:**यूपीएससी में विभिन्न पदों पर निकली भर्ती, इन 5 तरीकों से करें अप्लाई**

संघ लोक सेवा आयोग ने ड्रग इंस्पेक्टर, असिस्टेंट इंजीनियर, लीगल ऑफिसर सहित कई पदों पर भर्ती के लिए ऑफिशियल नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। जो उम्मीदवार इन पदों पर नौकरी करना चाहते हैं। वे उम्मीदवार यूपीएससी की ऑफिशियल वेबसाइट upsc.gov.in पर जाकर ऑनलाइन माध्यम में आवेदन कर सकते हैं। इस भर्ती अभियान के जरिये कुल 450 योग्य उम्मीदवारों की नियुक्ति जाएगी। आवेदन करने की लास्ट डेट 17 जुलाई, 2026 निर्धारित की गई है।

कौन कर सकते हैं आवेदन—

आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों की पदानुसार अधिकतम आयु 35, 38 और 40 वर्ष निर्धारित की गई है। रिजर्व कैटेगरी के उम्मीदवारों को आयु-सीमा में कुछ विशेष छूट भी दी जाएगी। विभिन्न पदों पर आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों के पास भारत के किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से पद से संबंधित विषय में स्नातक या स्नातकोत्तर की डिग्री व अन्य निर्धारित पात्रताएं होनी चाहिए।

रजिस्ट्रेशन फीस—

आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों को रजिस्ट्रेशन फीस

का भुगतान करना होगा। जनरल कैटेगरी के उम्मीदवारों के लिए रजिस्ट्रेशन फीस 25 रुपये निर्धारित की गई है। इसके साथ ही एससी एवं एसटी, महिला और दिव्यांग वर्ग के उम्मीदवारों को आवेदन शुल्क में छूट दी गई है।

इन 5 स्टेप्स से करें घर बैठे खुद अप्लाई—

यूपीएससी में विभिन्न पदों पर आवेदन शुरू हो गए हैं। उम्मीदवारों की सहायता के लिए यहां रजिस्ट्रेशन करने के निम्नलिखित स्टेप्स बताए गए हैं। उम्मीदवार इन स्टेप्स को फॉलो करके अपना फॉर्म भर सकते हैं—

- * आवेदन करने के लिए सबसे पहले ऑफिशियल वेबसाइट upsc.gov.in पर जाकर विजिट करें।
- * अब वेबसाइट के होमपेज पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन लिंक पर क्लिक करें।
- * लिंक पर क्लिक करने के बाद मांगी गई सभी जानकारी को ध्यान से दर्ज कर लें।
- * इसके बाद जरूरी दस्तावेजों की स्कैन कॉपी को अपलोड करें और रजिस्ट्रेशन फीस का भुगतान करें।
- * अंत में इसका एक प्रिंट आउट भी अवश्य निकाल लें।



जगन्नाथ रथ यात्रा- इतिहास, उत्पत्ति और संपूर्ण जानकारी

परिचय—

जगन्नाथ रथ यात्रा भारत के सबसे प्राचीन और भव्य धार्मिक उत्सवों में से एक है। यह प्रतिवर्ष जगन्नाथ मंदिर से प्रारंभ होकर लगभग 3 किलोमीटर दूर गुंडीचा मंदिर तक निकाली जाती है। इस यात्रा में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा तीन विशाल लकड़ी के रथों पर विराजमान होकर नगर भ्रमण करते हैं।

रथ यात्रा कब से शुरू हुई—

रथ यात्रा की परंपरा अत्यंत प्राचीन मानी जाती है। वर्तमान स्वरूप में इसका संबंध 12वीं शताब्दी में बने जगन्नाथ मंदिर से जोड़ा जाता है। परंपरा के अनुसार मंदिर के निर्माण के बाद तत्कालीन गजपति राजाओं ने इसे नियमित वार्षिक उत्सव के रूप में स्थापित किया। हालांकि इसकी धार्मिक कथाएँ इससे भी कहीं अधिक प्राचीन मानी जाती हैं।

रथ यात्रा की शुरुआत कैसे हुई—

इस संबंध में कई प्रसिद्ध मान्यताएँ हैं—

- 1. राजा इन्द्रद्युम्न की कथा-** कहा जाता है कि राजा इन्द्रद्युम्न भगवान विष्णु के परम भक्त थे। उन्होंने भगवान जगन्नाथ का भव्य मंदिर बनवाया। जब भगवान की मूर्तियाँ स्थापित हुईं, तब रानी गुंडीचा ने भगवान से निवेदन किया कि वे वर्ष में एक बार उनके मंदिर भी पधारें। भगवान ने यह वचन स्वीकार किया और तभी से प्रत्येक वर्ष रथ यात्रा में भगवान गुंडीचा मंदिर जाते हैं।
- 2. भगवान श्रीकृष्ण की लीला—** वैष्णव परंपरा में भगवान जगन्नाथ को श्रीकृष्ण का स्वरूप माना जाता है। रथ यात्रा को श्रीकृष्ण की वृन्दावन-प्रेम लीला तथा भक्तों से मिलने के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है।

रथ यात्रा क्यों निकाली जाती है—

रथ यात्रा का संदेश है कि भगवान स्वयं अपने भक्तों के बीच आते हैं। सामान्य दिनों में जो लोग मंदिर के गर्भगृह में दर्शन नहीं कर पाते वे इस दिन भगवान के दर्शन कर सकते हैं। यह उत्सव समानता, सेवा और भक्ति का प्रतीक माना जाता है।

तीनों रथों के नाम—

भगवान जगन्नाथ का रथ, नंदीघोष- लगभग 16 पहिए, सबसे बड़ा रथ- भगवान बलभद्र का रथ, तालध्वज- 14 पहिए, देवी सुभद्रा का रथ, दर्पदलन (देवदलन)- 12 पहिए। हर वर्ष इन रथों

का निर्माण नई लकड़ी से किया जाता है।

प्रमुख अनुष्ठान—

अक्षय तृतीया से रथ निर्माण प्रारंभ, स्नान पूर्णिमा पर 108 कलशों से अभिषेक, इसके बाद 'अनसर' नामक लगभग 15 दिन की अवधि, जिसमें भगवान विश्राम करते हैं, आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को रथ यात्रा प्रारंभ, गुंडीचा मंदिर में लगभग एक सप्ताह प्रवास, फिर बहुदा यात्रा द्वारा मुख्य मंदिर वापसी, अंत में नीलाद्रि विजे के साथ उत्सव सम्पन्न होता है।

छेरा पहरा की अनोखी परंपरा—

रथ यात्रा में पुरी के गजपति महाराज स्वर्ण झाड़ू से रथों की सफाई करते हैं। यह परंपरा संदेश देती है कि भगवान के सामने राजा और सामान्य व्यक्ति सभी समान हैं।

रथ यात्रा का संदेश—

सभी मनुष्य समान हैं, ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग भक्ति और सेवा है। जाति, वर्ग और पद का अहंकार त्यागना चाहिए, समाज में प्रेम, सहयोग और सद्भाव बनाए रखना चाहिए।

मानवाधिकार की दृष्टि से महत्व—

रथ यात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता का प्रतीक भी है। इसमें लाखों लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ भाग लेते हैं। यह समानता, सहभागिता, सेवा और मानव एकता का संदेश देती है।

प्रेरक संदेश—

‘जगन्नाथ रथ यात्रा हमें सिखाती है कि ईश्वर किसी एक वर्ग के नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के हैं। सेवा, समानता, प्रेम और करुणा ही सच्चे धर्म का आधार हैं।’



सामान्य ज्ञान—

राजस्थान संक्षिप्त परिचय

51. सबसे प्राचीन वलित पर्वत श्रृंखला कौनसी है?

उत्तर— अरावली

52. राजस्थान के कौनसे जिले में अरावली का खामली घाट स्थित है।

उत्तर— राजसमंद-पाली जिले में

53. अरावली श्रृंखला की दूसरी सर्वोच्च चोटी है।

उत्तर— सेर

54. मरु पर्यटन सर्किल में सम्मिलित नगर है।

उत्तर— बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर

55. अरावली पर्वतमाला का उद्भव कब हुआ था

उत्तर— केम्ब्रियन पूर्व

56. पाली जिले की सीमा को राजस्थान के कितने जिले छूते हैं।

उत्तर— 8 (आठ)

57. केवड़ा की नाल किस जिले में स्थित है

उत्तर— उदयपुर

58. थार मरुभूमि और पाकिस्तान दोनों देशों की सीमाओं में व्याप्त हैं, थार शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर— मरुभूमि

59. ककरेखा किस जिले के दक्षिण भाग से होकर गुजरती है।

उत्तर— बांसवाड़ा

60. राज्य में तश्तरीनुमा बेसिन में बसा नगर है।

उत्तर— उदयपुर

61. व्यर्थ भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल वाला जिला।

उत्तर— जैसलमेर

62. तालछापर व पड़िहार रन क्षेत्र है।

उत्तर— शेखावटी क्षेत्र

63. खारी व लवणीय भूमि को क्या कहते हैं।

उत्तर— ऊसर भूमि

64. अरावली पर्वत श्रृंखला के प्रमुख दरें हैं।

उत्तर— देसूरी व हाथी दरें

65. पश्चिमी राजस्थान में सबसे अधिक व विस्तृत क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी।

उत्तर— रेतीली मिट्टी

66. क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का भारत में कौन-सा स्थान है।

उत्तर— प्रथम

67. पूर्वी राजस्थान की जलवायु है।

उत्तर— उप आर्द्र

68. राजस्थान में गर्मी किस महिने में सबसे अधिक होती है।

उत्तर— जून में

69. संरचनात्मक दृष्टि से अरावली पर्वत श्रृंखला का रचनाक्रम में है।

उत्तर— देहली क्रम

70. मारवाड़ के मैदानी भाग को कूवाड़ के उच्च पठार से अलग करने वाली पर्वत श्रेणी कौनसी है।

उत्तर— मेरवाड़ा की पहाड़ियाँ

71. राजस्थान के किस जिले का आकार कुछ-कुछ अर्द्धचन्द्र या प्याले जैसा है।

उत्तर— सीकर

72. अरावली पर्वत श्रृंखला का शाब्दिक अर्थ क्या है।

उत्तर— चोटियों की पंक्ति

73. राजस्थान का कौनसा शहर ककरेखा के सबसे निकट स्थित है।

उत्तर— बांसवाड़ा

74. बांसवाड़ा राजस्थान के किस कृषि जलवायवीय खण्ड में आता है।

उत्तर— आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र

75. राजस्थान में राष्ट्रीय मरु उद्यान कहाँ स्थित है।

उत्तर— जैसलमेर व बाड़मेर

76. पूर्वी राजस्थान की जलवायु परिस्थितियाँ सामान्यतः होती हैं।

उत्तर— नम

77. थार मरूस्थल को किस नाम से जाना जाता है।

उत्तर— ग्रेट इंडियन डेजर्ट

78. राजस्थान में करौली जिला कब अस्तित्व में आया।

उत्तर— 19 जुलाई 1997 में

79. भीलवाड़ा, टोंक और नागौर किस संभाग में आते हैं।

उत्तर— अजमेर

80. बाँसवाड़ा राजस्थान के किस जलवायु क्षेत्र में आता है।

उत्तर— आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र

81. सनसेट दृश्य निहारने के लिए पर्यटकों को राजस्थान के नगर में जाना चाहिए।

उत्तर— माउण्ट आबू

82. अरावली पर्वतमाला राज्य के कितने प्रतिशत क्षेत्र में फैली हुई है।

उत्तर— 9 प्रतिशत

83. राजस्थान के किस प्राकृतिक प्रदेश में मुकन्दरा की पहाड़ियाँ स्थित हैं।

उत्तर— हाड़ौती के पठार पर

84. ऊँचाई के हिसाब से अरावली पर्वत की चोटियों का सही क्रम क्या है।

उत्तर— गुरु शिखर, सेर, जरगा, अचलगढ़

85. अरावली पर्वतमाला की सर्वाधिक ऊँचाई एवं चौड़ाई किस क्षेत्र में विद्यमान है।

उत्तर— दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में

86. दक्षिणी -पूर्वी राजस्थान में स्थित भौगोलिक प्रदेश जाना जाता है।

उत्तर— हाड़ौती का पठार

87. राजस्थान के किस जिले में जरगा पर्वत है।

उत्तर— उदयपुर में

88. राजस्थान के वे जिले जिनका सम्बंध कर्क रेखा से है।

उत्तर— बाँसवाड़ा व डूंगरपुर

89. राजस्थान का क्षेत्रफल भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का कितने प्रतिशत है।

उत्तर— 10.41 प्रतिशत

90. राजस्थान में गुरु शिखर पर्वत की ऊँचाई कितनी है।

उत्तर— 1727 मीटर

91. 'छप्पन का मैदान' राजस्थान के किस भाग में स्थित है।

उत्तर— दक्षिण भाग में

92. क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा व सबसे छोटा जिला कौनसा है।

उत्तर— जैसलमेर व धौलपुर

93. गोगुन्दा व कुम्भलगढ़ के मध्य स्थित पठार का नाम क्या है।

उत्तर— भोरट

94. सीमा विकास कार्यक्रम का सम्बन्ध राज्य के किस जिलों से है।

उत्तर— गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर व बाड़मेर

95. राजस्थान में अरावली पर्वत श्रेणियों की दिशा है।

उत्तर— दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व

96. 'अरावली पर्वत श्रृंखला' का विकास किस काल में होना माना जाता है।

उत्तर— प्रिकेम्ब्रियन काल

97. राज्य का आर्द्र जिला कहलाता है।

उत्तर— झालावाड़

98. राज्य का सबसे नवीन जिला कौन-सा है।

उत्तर— प्रतापगढ़

99. प्रतापगढ़ जिला कब अस्तित्व में आया।

उत्तर— 26 जनवरी, 2008 को

100. प्रतापगढ़ जिले में कुल कितनी तहसीलें हैं।

उत्तर— 5

क्रमशः

शेष प्रश्न अगले अंक में...

छोटे कदम बड़े सपनों की ओर | Since 1999

JAI JASOL

BUILDING MATERIAL



BEST INVESTMENT



BEST RETURN



विश्वसनीयता
हमारी पहचान



पारदर्शिता
हमारी नीति



गुणवत्ता
हमारी प्राथमिकता



आपका भरोसा
हमारी जिम्मेदारी



हाइवे प्रोजेक्ट

- ✓ सभी प्रकार के निर्माण सामग्री
- ✓ समय पर सप्लाई
- ✓ उत्तम गुणवत्ता
- ✓ सरकारी मानकों के अनुसार



रेलवे प्रोजेक्ट

- ✓ सभी प्रकार के निर्माण सामग्री
- ✓ समय पर सप्लाई
- ✓ उत्तम गुणवत्ता
- ✓ सरकारी मानकों के अनुसार



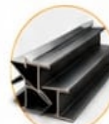
सीमेंट



ईंट



सरिया



एंगल / चैनल



गिट्टी



रेती



पेंट



और सभी निर्माण
सामग्री



समय पर डिलीवरी
आपके निर्माण का साथी



बेहतर सेवा
आपकी संतुष्टि हमारा लक्ष्य



हमारा पता
आपके नजदीक, हमेशा आपके साथ

पार्टनरशिप आमंत्रित



Contact us :

9460087795

